प्रातः क्लास 20-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा यादहै?

ओमशान्ति। पहला-पहला बाप का सबक है अपन को आत्मा समझो। अथवा मन्मनाभव। यह है संस्कृत का अक्षर। अभी बच्चे जब सर्विस करते हैं तो पहले2 ही उनको अलफ पढ़ाना है। जब भी कोई आवे तो शिव बाबा के चित्र के आगे ही ले जाना है। और कोई चित्र आगे नहीं। पहले2 बाप के चित्र पास। उनको भी कहना है बाबा कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को यादकरो। मैं तुम्हारा सुप्रीम बाप भी हूं, सुप्रीम टीचर भी हूं, सुप्रीम गुरु भी हूं। सभी को यह सबक सिखलाना है। शुरु ही वहां से करना है। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो। क्योंकि तुम जो पतित बने हो वह फिर पावन सतोप्रधान बनना है। पहले2 यह सबक जरूर चाहिए। इसमें सभी बातें आ जाती हैं। सभी कोई ऐसे करते नहीं हैं। बाबाकहते हैं पहले2 शिव बाबा के चित्र पर ही ले जाना है। यह बेहद का बाप है। बाप कहते हैं मामेकं याद करो अपन को आत्मा समझो। तो तुम बच्चों को बेरा पार है। याद करते2 पवित्र दुनिया में पहुंच ही जाना है। यह सबक तो कम से कम 5मिनट तोघड़ी2 पक्का कराना है। बाप को याद किया? अपन को आत्मा समझा। बाबा बाबा भी है। रचयिता का रचयिता भी है। रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। क्योंकि मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। पहले2 तो यह निश्चय कराना है। बाप को याद करते हो। यहनालेज बाप ही देते हैं। हमने भी बाप से नालेज ली है। जो हम आप को देते हैं। पहला2 मंत्र ही यह पक्का कराना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तोधनी के बन जावेंगे। इसके ऊपर ही समझाना है। जब तक यह न समझे तब तक पैर आगे बढ़ाना ही नहीं है। ऐसे बाप के परिचय पर दो चार चित्र होने चाहिए। तो उस पर अच्छी रीत समझाने से उनकी बुधि में आ जावेगा। हमको बाप को याद करना है। वह सर्वशक्तिवान है।। उनको याद करने से ही पाप कट जावेंगे। बाप की महिमा तो क्लीयर है। पहले2 यहजरूर समझाना चाहिए अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करो। देह के सभी सम्बन्ध भूल जाओ। मैं सिखा हूं। फलाना हूं। यह छोड़ एक को याद करना है। पहले2 तो बुधि में यह मुख्य बात बताओ। वह बाप ही पवित्रता-सुख-शान्ति का वरसा देने वाला है। बाप ही कैरेक्टर्स सुधारते हैं। तो बाप को ख्याल आया पहला सबक इस रीति पक्का कराते नहीं हैं। जो है बिल्कुल जरूरी। जितना यह अच्छी रीत कुटेंगे उतना ही बुधि में याद रहेगा। एक बाप दूसरा न कोई। क्योंकि बाकी सभी हैं रचना। पहले2 बाप का परिचय। भल 5मिनट लग जाये हटाना न है। बहुत ही खुशी से बाप की महिमा सुनेंगे। यह बाप का चित्र ही मुख्य है। क्यु सारी इस चित्र के आगे होनी चाहिए। बाप का पैगाम सभी को देना है। पीछे रचना का नालेज देना होता है। यह चक्र कैसे फिरता है। जैसे मशाला एकदम कुट2 कर महीन बनाया जाता है ना। तुम भी ईश्वरीय मिशन हो। तो अच्छी रीत एक एक बात बुधि में बिठानी है। क्योंकि बाप को ही न जानने कारण सभी निधणके बन पड़े हैं। बाप का कोई को परिचय ही नहीं। वह पूरा परिचय देना है। बाबा सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी हैसुप्रीम गुरु भी है। तीनों ही कहने से फिर सर्वव्यापी की बात बुधि से उड़ जावेगी। गुरु तो ज्ञान देते हैं, टीचर पढ़ाते हैं। वह फिर सर्वव्यापी कैसे होगा। यह तो पहले2 बुधि में बिठाओ। बाप को याद करना है तब ही तुम पतित से पावन बन सकेंगे। देवीगुण भी धारण करनी है। सतोप्रधान बनना है। तुम उनको बाप की याद दिलावेंगे। इसमें तुम बच्चो का बहुत कल्याण है। तुम भी मन्मनाभव रहेंगे। तुम पैगम्बर हो ना। तो बाप का ही परिचय देना है। बाप को याद करो। भारत में तो क्या सारी दुनिया में एक भी मनुष्य नहीं जिसको यह पता हो कि बाबा हमारा बाबा भी है टीचर भी है, गुरु भी है। बाप का परिचय सुनने से वह बहुत ही खुश हो जावेंगे। भगवानुवाचः मामेकं यद करो तो तुम्हारे पाप कटजावेंगे। यह भी तुम जानते हो गीता के बाद फिर महाभारत लड़ाई भी दिखाई है। अभी और तो कोई लड़ाई की बात ही नहीं। तुम्हारी लड़ाई है ही बाप को याद करने में। पढ़ाई तो

अलग है। बाकी लड़ाई है याद की बात में। क्योंकि सभी है देहअभिमानी। तुम अभी बनते हो देहीअभिमानी। बाप को याद करने वाले। पहले2 यह पक्का कराओ बब बाप टीचर गुरु भी है तीनों ही हैं। अभी हम उनकी सुनु सुने या मनुष्यों की सुने। मनुष्य मत पर ही इतने सारे शास्त्र बने हैं। मनुष्यमत पर बनाई हुई शास्त्रों पर तो हम बहुत2 चले हैं। शास्त्र बनाई ही है मनुष्यों ने। वह है मनुष्य मत। यह है ईश्वरीय मत। वह है मन मत। शास्त्र जो पढ़े हैं वह भी मन मत। मनुष्य मत। मनुष्यों की बनाई शास्त्र आधा कल्प पढ़ी है। अभी श्रीमत पर चलना है श्रेष्ठ बनने लिए। हम यही सेवा करते हैं। ईश्वरीय मत पर चलो तो तुम्हारे सभी विकर्म विनाश हो जावेंगे। बाप की श्रीमत है कि मामेकं याद करो। सृष्टि का चक्र जो समझाते हैं यह भी उनकी मत है। तुम भी पवित्र बनेंगे और बाप को याद करेंगे तो बाप कहते हैं मैं साथ ले जाऊंगा। बाबा बेहद का रूहानी पण्डा भी है। उनको बुलाते भी हैं हे पतित पावन। हमको पावन बनाकर इस पतित दुनिया से वापस ले चलो। वह सभी हैं जिसमानी पण्डे। यह है रूहानी पण्डा। यह किसको भी पता नहीं है। शिव बाबा हमको पढ़ाते हैं। बाप तुम बच्चों को भी कहते हैं चलते-फिरते उठते-बैठते बाप को ही याद करते रहो। इसमें अपन को थकाने की भी बात नहीं। बाबा देखते हैं कब कब बच्चे सवेरे ही आकर बैठते हैं तो जरूर थक जाते होंगे। यह तो सहज मार्ग है ना। हठ से बैठना नहीं है। भल चक्र लगाकर आओ, घूमो फिरो। बहुत खुशी से बाप को याद करते रहो। बाबा बाबा की बहुत उछल आनी चाहिए। उछल उनको आवेंगे जो हरदम बाप की याद में रहते होंगे। कुछ न कुछ जो खाद है उनको निकालना है। बाप के साथ अति प्यार हो। वह अतिईन्द्रिय -सुख हो। यह है अन्त की बात। तुम बाप की याद में लग जावेंगे। तब ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर तुम्हारी खुशी का पारावार नहीं रहेगा। इन सभी बातों का वर्णन हीयहां होता है। इसलिए गायन भी है अति ईन्द्रियसुख गोपी वल्लभ के बच्चों से पूछो। जिनको भगवान बाप पढ़ाते हैं। भगवानुवाचः मुझे याद करो। बाप की ही महिमा बतानी है। बाप को याद कर बाप से वरसा लेना है। वरसा देने वाला एक ही बाप है। गुरु से कोई को भी वरसा नहीं मिलता। सदगति का वरसा तो एक बाप से ही मिलता है। वरसा देने वाला एक बाप ही है। सभी को सदगति मिलती है जरूर। पहले सभी जावेंगे शान्तिधाम। यह भी तुम्हारी बुधि में होना चाहिए बाप हमको सदगति दे रहे हैं। शान्तिधाम सुखधाम किसको कहा जाता है यह तो समझाया है। शान्तिधाम में सभी आत्मायें रहती हैं। स्वीट सायलेन्स होम। टावर ऑफ सायलेन्स। उसको इन आंखों से कोई देख न सके। वह सायंस घमण्डी इन आंखों से जो चीज़ देखते हैं उस पर ही बुधि चलती है। आत्माओं को तो इन आंखों से कोई देख न सके। समझ सकते हैं। जब कि आत्मा को ही नहीं देख सकते तो बाप को भी फिर कैसे देख सकते। यह समझ की बात है ना। इन आंखों से देखा नहीं जा सकता। भगवानुवाचः है मुझे याद करो तो पाप भस्म होंगे। यह किसने कहा है पूरा समझ नहीं सकते हैं। वह समझते हैं कृष्ण के लिए। कृष्ण को बहुत याद करते हैं। दिन-प्रति-दिन व्यवभिचारी होते जाते हैं। भक्ति में भी पहले एक शिव की भक्ति करते थे वह है अव्यभिचारी भक्ति। फिर ल०ना० विष्णु को भक्ति में आये हैं। ऊंच ते ऊंच है भगवान। वही वरसा देते हैं। यह विष्णु बनने का। तुम विष्णु वंशी गाते हो। विष्णु के फिर मालिक बनते हैं। माला बनती ही तब है जब पहला सबक अच्छी रीत पढ़ते हैं। बाप को याद करना कोई मासी का घर नहीं है। सभी तरफ से बुधि योग हटाये एक तरफ लगाना है। जो कुछ इन आंखों से देखते हो उनसे बुधि योग हटा दो। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। इसमें मुंझना न है। बाप इस रथ में बैठे हैं। उनकी ही महिमा करते हैं। वह है निराकार। इन द्वारा हमको यह घड़ी2 याद दिलाते हैं। तुम मन्मनाभव होकर रहो गोया तुम सभी पर उपकार करते हो। जब खाना पकाने वाले को भी कहते हैं शिव बाबा को याद करो तो सभी की बुधि में बैठ जावेगा। एक दो को ही याद दिलाना है। शिव बाबा को याद करो। तो वह आदत पड़ जावेगी। पहले2 शिव बाबा। आगे चल बाबा यह चित्र आद भी उड़ाते रहेंगे। यह सभी

खत्म होनी ही है। तो मुख्य बात है बाप की याद। बाप सभी बच्चों को याद करते हैं ना। कुछ न कुछ मदद करते हैं। कोई आधा घन्टा बैठते हैं, कोई दस मिनट बैठते हैं। अच्छा 5मिनट बैठते हैं बाप को याद किया तो राजधानी मे आवेंगे। राजा रानी हमेशा सभी को प्यार करते हैं। तुम भी प्यार के सागर बनते हो ना। इसलिए सभी पर प्यार रहता है। प्यार ही प्यार। बाप प्यार का सागर है तो बच्चों को भी जरूर ऐसा प्यार होगा। तब वहां भी प्यार करेंगे। राजा रानी का भी बहुत प्यार होता है। बच्चों का भी बहुत प्यार होता है। प्यार भी बेहद का। यहां तो प्यार का नाम नहीं। मार है। कटारी मारने का कब ख्याल भी न करना चाहिए। यह है एक दो को खून करना। सारी दुनिया मे एक दो को कोस करते हैं। वहां हिंसा कटारी होती ही नहीं। इसलिए भारत की महिमा अपरमअपार गाई हुई है। भारत जितना पवित्र देश कोई है नहीं। यह सभी से भारी तीर्थ है। बाप आते ही हैं यहां। बाप आकर सभी की सेवा करेंगे। सभी को पढ़ावेंगे ना। मुख्य है पढ़ाई। तुम से कोई2 पूछते हैं तुम भारत की क्या सेवा करते हो। बोलो तुम चाहते हो भारत पावन हो। अभी पतित हैं ना। तो हम श्रीमत पर भारत को पावन बनाते हैं। सभी को कहते हो बाप को याद करो। तो पतित से पावन बन जावेंगे। हम रूहानी सेवा कर रहे हैं। भारत जो सालवेन्ट था पीस प्रास्पर्टी थी। वह फिर से बना रहे हैं। श्रीमत पर। कल्प पहले माफिक ड्रामा प्लेनअनुसार। यह अक्षर पूरी याद करो। ड्रामा के प्लेनअनुसार। मनुष्य चाहते हैं वर्ल्ड में पीस हो। सो हम कर रहे हैं। भगवानुवाच। बाप हम बच्चों को समझाते रहते हैं। मुझे याद करो। यह भी बाबा जानते हैं। तुम कोई इतना याद थोड़े ही करते हो। इसमें ही मेहनत है। याद से ही तुम्हारी कर्मातीत अवस्था आवेगी। तुमको स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। इनका अर्थ भी किसकी बुधि में नहीं है। शास्त्रों में तो अन्त कथाएं लिख दी हैं। अभी बाप तो कहते हैं जो कुछ पढ़े हो वह सभी भूल जाना है। अपने को आत्मा समझना है। अब मैं तो पढ़ाता हूं वही साथ चलना है। और कुछ भी साथ नहीं चलेगा। यह बाप की पढ़ाई ही साथ चलना है। इसके लिए कोशिश कर रहे हैं। छोटे2 बच्चे को भी कम मत समझो। जितना छोटे उतना नाम निकाल सकते हैं। छोटी2 बच्चियां बैठ बूढ़ों को समझावेंगे तो कमाल कर दिखावेंगे। उन्हों को भी आप समान बनाना है। कोई प्रश्न पूछे तो रेसपान्ड दे सके। ऐसे तैयार करो। फिर जहां2 सेन्टर वा म्युजियम हो तो उनको भेज देना चाहिए। ऐसा ग्रुप तैयार करो। टाईम तो बहुत है। ऐसी2 सर्विस करो। बड़े2 बूजुर्ग को यह छोटी2 कुमारियां बैठसमझावे तो कमाल है। कोई पूछे किसके बच्चे हो हम शिव बाबा के। वह निराकार है। ब्रह्मा तन में आकर हमको पढ़ाते हैं। इस पढ़ाई से ही हमको यह बनना है। सतयुग आद में इन लक्ष्मी नारायण का राज्य था ना। इनको ऐसे किसने बनाया। जरूर ऐसे कर्म किये होंगे ना। बाप बैठ कर्म-विकर्म अकर्म की गति सुनाते हैं। शिव बाबा हमको पढ़ाते हैं। वही बाप टीचर गुरु है। तो बाप समझाते हैं मूल एक बात पर ही खड़ा कर समझाना है। पहले2 अलफ। अलफ को समझावेंगे तो इतने फिर प्रश्न आद कोई पूछेंगे नहीं। अलफ समझने बिगर बाकी और चित्रों पर समझेंगे तो मगज ही खराब कर देंगे। पहली बात है ही अलफ की। हम श्रीमत पर चलते हैं। बाकी शास्त्र आद सभी मनुष्य की मत। श्रेष्ठ बनाने वाला है बाप। भ्रष्ट बनाने वाले हैं मनुष्य मत। ऐसे2 इसमझाने से फिर कोई बात पर प्रश्न आद नहीं उठावेंगे। ऐसे ही निकलेंगे जो कहेंगे अलफ समझ लिया बाकी यह चित्र आद क्या देखो। हम अलफ को जान लिया तो तो सभी कुछ समझ लिया। भिक्षा मिली यह गया। तुम फर्स्ट क्लास भिक्षा देते हो। बाप का परिचय देने से ही बाप को जितना याद करेंगे तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। अच्छा मीठे2 सिकलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग और नमस्ते।

सृष्टि चक्र याद है? बाप और वरसा याद है?

***